ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 36 बुलेटिन अवधिः 10–14 मई, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 9 मई, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	10–05–2017	11–05–2017	12–05–2017	13–05–2017	14–05–2017
वर्षा (मिमी0)	5	5	5	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	38	37	37	38	39
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	21	22	20	20	20
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	12	14	14	08	10
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**2 से 8 मई** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 35.5 से 40.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 18.0 से 27.5 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 48 से 62 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 15 से 46 प्रतिशत एवं हवा 3.6 से 10.2 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–दक्षिण–पूर्व व पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्ष

फसल प्रबन्धः

- ❖ मई माह मे खेत की मेड़ बन्दी कर जुताई कर के छोड़ दे। ग्रीष्मकालीन जुताई से खेत के कीटो एवं बीमारियो के लारवा एवं खरपतवार आदि के बीज नष्ट हो जाते है मेड़ बन्दी से वर्षा जल खेत में ही रहेगा तथा जल बहाव के साथ मिट्‌टी बहकर बाहर नही जाएगी।
- ❖ अगर सिंचाई की सुविधा है तो गेंहूँ एवं अन्य रबी फसलो की कटाई के बाद खाली खेत में हरी खाद हेतू ढैंचा तथा सनई की बुवाई करें।
- ❖ सनई की नरेन्द्र सनई–1 तथा ढैंचा की पंत ढैंचा–1 हिसार ढैंचा–1 आदि उन्नतशील किस्मो का चुनाव करे। सनई हेतू बीज दर 80–90 किलोग्राम/हेक्टेयर तथा ढैंचा हेतू बीज दर 60–80 किलोग्राम/हेक्टेयर रखें।
- ❖ रबी फसलो की कटाई के बाद खाली खेत से इस मई माह में मृदा नमूना खेत से 10–15 विभिन्न स्थानो से लेना चाहिए। मिट्‌टी का नमूना 20 सेमी तक की गहराई से लेना चाहिए।
- ❖ गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य पूर्ण करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ टमाटर व प्याज की फसल मे हल्की सिंचाई करे।
- ❖ जिन किसान भाइयो ने प्याज की रोपाई 15–20 जनवरी के आस–पास की हो उनके कन्द तैयार हो चुके हे। फसल में सिंचाई बन्द कर दे।
- ❖ जो किसान भाई लहसुन की फसल में सिंचाई कर रहे हो वह बंद कर दें। लहसुन के तैयार कन्दो को उखाड़ कर छाया मे रखे तथा छोटे बन्डल बनाकर किसी शुष्क स्थान पर रखें जहॉ वायु का आवागमन हो उसको भण्डारित करे।
- ❖ फसल को रूच्छ रोग या एन्थ्रोनेट के बचाव हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवा का 0.25 प्रतिशत घोल बनाकर 2–3 छिड़काव करे।
- ❖ भिण्डी में फलवेधक कीट दो बचाव हेतु सेविन (कार्बोलिक) 2 प्रतिशत का घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ कद्‌दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ भिण्डी की फसल में पत्तियों की नसे यदि पीली पड़ रही हो तो ऐसे पौधो को निकालकर नष्ट कर दे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण के लिए किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पॉच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पॉच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- ❖ आम के बाग में डांसी मक्खी के लिए काष्ठ निर्मित यौन गंध ट्रैप को पेड़ पर लगाना चाहिए (10 ट्रैप/हे0)। यौन गंध ट्रैप को दो माह में बदल देना चाहिए।
- ❖ कोयलिया और आन्तरिक विगलन के नियंत्रण के लिए 0.8–1.0 प्रतिशत (10 ग्रा0/ली0) बोरेक्स का छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ आवश्यकतानुसार उचित नमी बनाये रखने हेतु सिंचाई करते रहे।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॅान अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो8 का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- ❖ विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु

गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।

- अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
- पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।

- अप्रैल माह से भैंसों को पशुशाला में सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक रखना चाहिए, जिससे उन्हें तेज धूप से बचाया जा सके।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर